Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886| **Web of Science ResearcherIDJTT-1295-2023**
Vol. 17 Issue 6, June- 2022
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

शिक्षक शिक्षा तथा स्नातक महाविद्यालय के विद्यार्थियों में खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Rajesh Kumar, Assistant Registrar,

Shri Vishwakarma Skill University Palwal Haryana

भूमिका

विश्व में भारत सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक देश है। प्रजातांत्रिक देश के नागरिकों का कर्तव्य है कि वे अपने पैरों पर खड़े होकर आत्मनिर्भर हों, वरना प्रजातंत्र ज्यादा दिनों तक स्थायी नहीं रह सकता। स्वामी विवेकानंद ने इस संबंध में लिखा है कि "सर्वप्रथम हमारे युवक बलिष्ठ होने चाहिए, धर्म तो बाद की बात है। गीता के अध्ययन की अपेक्षा हम खेल के द्वारा स्वर्ग के अधिक निकट होंगे। आप अपने बाहुबल से मांसपेशियों द्वारा गीता को भली प्रकार समझ सकेंगे, उपनिषदों को भी अच्छी प्रकार समझ सकेंगे तथा आत्मा के गौरव को जान सकेंगे। जब आप अपने पैरों पर दृढ़ता से खड़े होंगे, तो अपने आप को सही मानव समझने लगोगे।"

खेल की प्रवृत्ति बालकों में बाल्यकाल से ही डालनी चाहिए। जो बच्चे बचपन से ही खेलों में भाग लेते हैं, उनका शरीर सुडौल और दिमाग तेज होता है तथा शरीर स्वस्थ रहता है। बच्चों के लिए खेलकूद कार्यक्रम की अनिवार्यता को अनुभव करते हुए विद्यालयों में भी खेलकूद कार्यक्रम की व्यवस्था करनी चाहिए। स्वस्थ शरीर के लिए उर्दू में एक सूक्ति कही गई है - "तंदुरुस्ती हजार नियामत," अर्थात स्वास्थ्य हजारों अन्य अच्छे भोगों से बढ़कर है, जो खेलों द्वारा ही मनुष्य को प्राप्त हो सकते हैं।

खेल का अर्थ एवं परिभाषाएं

खेलना आमोद एवं स्वतंत्रता से युक्त स्वाभाविक प्रवृत्ति है, जो सभी प्राणियों में विद्यमान होती है। खेल के अर्थ को स्पष्ट करते हुए वारेन ने लिखा है कि "खेल व्यक्ति के व्यवहार की आदर्शभूत प्रक्रिया है, जो कि आध्यात्मिक आवश्यकताओं की स्वयं ही पूर्ति कर देती है।"

फ्रायड ने लिखा है कि "कोई भी क्रिया जो कि अंतर्द्वंद्व से मुक्त है, वही खेल है।"

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886| **Web of Science ResearcherIDJTT-1295-2023**
Vol. 17 Issue 6, June- 2022
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

खेल का महत्व

मानव जीवन में खेलों का व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण स्थान है तथा स्वास्थ्य को बनाए रखने में खेल का महत्वपूर्ण योगदान है। यदि मनुष्य नियमित रूप से खेलता रहे, तो वह हष्ट-पुष्ट, शक्तिशाली, सुंदर व निरोग रहेगा। खेल के माध्यम से ही बालक अपने जीवन में उत्पन्न कुंठाओं व निराशाओं की अभिव्यक्ति करता है व मानसिक तनावों एवं विकृतियों का निराकरण करता है। खेल जीवन में आनंद के साथ-साथ जीवनशक्ति का विकास भी करता है। खेलों का शारीरिक, मानसिक, नैतिक, संवेगात्मक आदि अनेक स्तरों में महत्वपूर्ण स्थान है।

अभिवृत्ति का अर्थ, लक्षण, निर्धारक तत्व एवं प्रकार

अभिवृत्ति का अर्थ

अभिवृत्ति एक प्राणी की किसी एक विषय, वस्तु व व्यक्ति के प्रति विशेष अर्जित अनुभव तथा स्थिरीभूत संवेगात्मक प्रवृत्ति होती है। अभिवृत्ति अनुभव द्वारा गठित एक मनोवैज्ञानिक विषय के प्रति धनात्मक अथवा नकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया करने की संवेगात्मक प्रवृत्ति होती है।

शोध की आवश्यकता

विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों के विचारों से यह स्पष्ट है कि व्यक्तित्व के सर्वांगीण एवं संतुलित विकास में खेल का विशेष स्थान है। आध्यात्मिक व बौद्धिक विकास के लिए भी शारीरिक क्षमता अनिवार्य है।

खेलों में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों का मानसिक व संवेगात्मक स्तर सदैव अच्छा रहता है, जिससे वे अनुशासनहीनता, राष्ट्रद्रोह, हिंसावृत्ति व अराजकता आदि बुरे गुणों से दूर रहते हैं। अतः उनमें सद्गुणों जैसे - दया, ईमानदारी, न्याय, अहिंसा आदि का विकास होता है, जिससे राष्ट्र उन्नति के शिखर पर पहुंचता है। इसलिए आज देश के सभी विद्यालयों, स्नातक तथा स्नातकोत्तर महाविद्यालयों, प्रशिक्षण महाविद्यालयों आदि में खेलों के प्रति विद्यार्थियों की रुचियों के अनुसार प्रशिक्षण भी दिए जाते हैं।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886| **Web of Science ResearcherIDJTT-1295-2023**
Vol. 17 Issue 6, June- 2022
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इन्हीं सभी बातों को ध्यान में रखकर अनुसंधानकर्ता ने शिक्षक शिक्षा तथा स्नातक महाविद्यालय के विद्यार्थियों में खेलों के आयोजन एवं उनके संचालन की प्रक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

शोध कथन

"शिक्षक शिक्षा तथा स्नातक महाविद्यालय के विद्यार्थियों में खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।"

शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की व्याख्या

अभिवृत्ति

अभिवृत्ति व्यक्ति के उस दृष्टिकोण की ओर संकेत करती है, जिसके कारण वह किसी वस्तु, परिस्थिति, संस्था या व्यक्ति के प्रति कोई विशिष्ट व्यवहार करता है। अभिवृत्ति एक प्राणी के किसी विषय, वस्तु या व्यक्ति के प्रति एक विशेष अर्जित अनुभव या स्थिरीकृत संवेगात्मक प्रवृत्ति होती है। यह अनुभव द्वारा गठित एक मनोवैज्ञानिक विषय के प्रति धनात्मक अथवा नकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया करने की संवेगात्मक प्रवृत्ति होती है।

अनुकूल अभिवृत्ति

जब हम किसी वस्तु, व्यक्ति, संस्था, धर्म या प्रक्रिया के प्रति विश्वास रखते हैं, उसे पसंद करते हैं, स्वीकार करते हैं, उसके प्रति आकर्षित होते हैं तथा उसके अनुकूल स्वयं को समायोजित करने का प्रयास करते हैं, तो यह हमारी अनुकूल अभिवृत्ति कहलाती है।

खेलकूद

खेलना आनंद एवं स्वतंत्रता से युक्त एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है, जो सभी प्राणियों में विद्यमान होती है। कोई भी क्रिया जो कि अंतर्द्वंद्व से मुक्त हो, वही खेल कहलाती है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886| **Web of Science ResearcherIDJTT-1295-2023**
Vol. 17 Issue 6, June- 2022
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

शोध के उद्देश्य

1. **शिक्षक-शिक्षा तथा स्नातक महाविद्यालय के विज्ञान संकाय के छात्रों में खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।**
2. **शिक्षक-शिक्षा तथा स्नातक महाविद्यालय की विज्ञान संकाय की छात्राओं में खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।**
3. **शिक्षक-शिक्षा तथा स्नातक महाविद्यालय के कला संकाय के छात्रों में खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।**
4. **शिक्षक-शिक्षा तथा स्नातक महाविद्यालय की कला संकाय की छात्राओं में खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।**
5. **शिक्षक-शिक्षा तथा स्नातक महाविद्यालय के विज्ञान संकाय के छात्रों एवं छात्राओं की खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।**
6. **शिक्षक-शिक्षा तथा स्नातक महाविद्यालय के कला संकाय के छात्रों एवं छात्राओं की खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।**

शोध की परिकल्पनाएँ

1. **शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालय के विज्ञान संकाय के छात्रों एवं छात्राओं की खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।**
2. **शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालय के कला संकाय के छात्रों एवं छात्राओं की खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर है।**

शोध की परिसीमाएँ

1. **प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने फतेहाबाद जिले के महाविद्यालयों को ही लिया गया।**
2. **शोधकर्ता ने शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालय के** 100-100 **विद्यार्थियों को लिया, जिसमें** 50 **छात्र तथा** 50 **छात्राओं को शामिल किया गया।**

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886| **Web of Science ResearcherIDJTT-1295-2023**
Vol. 17 Issue 6, June- 2022
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

शोध विधि

शोधकर्ता ने विषय की समस्या को भली-भांति समझकर अध्ययन से संबंधित साहित्य के अध्ययन के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला कि शोध समस्या के मुख्य उद्देश्य अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि से अधिक संबंधित हैं।

प्रस्तुत शोधकार्य की जनसंख्या

शोधकर्ता ने अपने शोधकार्य में फतेहाबाद जिले महाविद्यालयों को लिया, जिसमें शिक्षक-शिक्षा महाविद्यालय व स्नातक महाविद्यालय के 100-100 विद्यार्थियों को लिया, जिसमें 50 छात्र तथा 50 छात्राओं को शामिल किया गया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में नमूने का चयन

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने समूह नमूना प्रणाली से नमूना लिया है। इस शोधकार्य में नमूना समान है, जिसे एक तालिका द्वारा प्रदर्शित किया गया।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में लिकर्ट पद्धति की विशेषता एवं सीमित समय को ध्यान में रखते हुए लिकर्ट पद्धति को अपनाना ही उचित समझा।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में एकांश विश्लेषण करने में "टी" मूल्य का उपयोग किया गया। उच्च एवं निम्न समूहों के प्रत्येक पद के उत्तरों में अंतर जानने के लिए प्रत्येक पद का विभेदीकरण मूल्य ज्ञात किया गया। इसके लिए सर्वप्रथम मध्यमान, प्रामाणिक विचलन ज्ञात कर दोनों मध्यमानों की प्रामाणिक त्रुटि एवं अंतर प्रामणिक त्रुटि निकाली गई। मध्यमानों से विभेदीकरण मूल्य ज्ञात किए गए तथा 'टी' मूल्य की सहायता से अच्छे एकांशों का चयन किया गया।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886| **Web of Science ResearcherIDJTT-1295-2023**
Vol. 17 Issue 6, June- 2022
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

शोध के निष्कर्ष

1. शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालयों के विज्ञान वर्ग के छात्रों की खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृति का अध्ययन

शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालयों के विज्ञान वर्ग के छात्रों के अंकों के मध्यमानों के अंतर को क्रांतिक अनुपात की कसौटी पर परखा गया, जहाँ क्रांतिक अनुपात 4.78 **प्राप्त हुआ, जो कि** .01 **व** .05 **स्तरों पर सार्थक है।**

निष्कर्ष

इससे निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालयों में से शिक्षक-शिक्षा महाविद्यालय की अभिवृत्ति अधिक है।

2. शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालयों के विज्ञान वर्ग की छात्राओं की खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृति का अध्ययन

शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालय की विज्ञान वर्ग की छात्राओं के अंकों के मध्यमानों के अंतर को क्रांतिक अनुपात की कसौटी पर परखा गया, जहाँ क्रांतिक अनुपात 4.86 **प्राप्त हुआ, जो कि** .01 **व** .05 **स्तरों पर सार्थक है।**

निष्कर्ष

शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालयों में से स्नातक महाविद्यालय की खेलकूद के प्रति अभिवृत्ति अधिक है।

3. शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालयों के कला वर्ग के छात्रों की खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृति का अध्ययन

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886| **Web of Science ResearcherIDJTT-1295-2023**
Vol. 17 Issue 6, June- 2022
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालय के कला वर्ग के छात्रों के अंकों के मध्यमानों के अंतर को क्रांतिक अनुपात की कसौटी पर परखा गया, जहाँ क्रांतिक अनुपात 0.57 **प्राप्त हुआ, जो कि** .01 **व** .05 **स्तरों पर असार्थक है।**

निष्कर्ष

शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालयों में से स्नातक महाविद्यालय की खेलकूद अभिवृत्ति अधिक है।

4. शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालय की कला वर्ग की छात्राओं में खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालय के कला वर्ग की छात्राओं के अंकों के मध्यमानों के अंतर को क्रांतिक अनुपात की कसौटी पर परखा गया, जहाँ क्रांतिक अनुपात 0.98 **प्राप्त हुआ, जो कि** .01 **व** .05 **स्तरों पर असार्थक है।**

परिकल्पनाओं का मूल्यांकन

1. **शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालय के विज्ञान वर्ग के छात्रों की खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति सार्थक सिद्ध हुई है। यह परिकल्पना सत्य साबित हुई।**
2. **शिक्षक-शिक्षा व स्नातक महाविद्यालयों की विज्ञान वर्ग की छात्राओं की खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति सार्थक सिद्ध हुई तथा इनमें धनात्मक सहसंबंध पाया गया।**
3. **शिक्षक-शिक्षा महाविद्यालय तथा स्नातक महाविद्यालय के कला वर्ग के छात्रों की खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति असार्थक सिद्ध हुई है तथा इनमें ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया।**
4. **शिक्षक-शिक्षा महाविद्यालय तथा स्नातक महाविद्यालय की कला वर्ग की छात्राओं की खेलकूद कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति असार्थक सिद्ध हुई है तथा इनमें ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया।**

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886| **Web of Science ResearcherIDJTT-1295-2023**
Vol. 17 Issue 6, June- 2022
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

भावी अनुसंधान के लिए सुझाव

1. **खिलाड़ी तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की खेल अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।**
2. **ओलंपिक स्तर के खिलाड़ियों व जिला स्तर के खिलाड़ियों की खेल अभिवृत्ति का अध्ययन।**
3. **ग्रामीण व शहरी खिलाड़ियों की खेल अभिवृत्ति का अध्ययन।**
4. **भारतीय व विदेशी खिलाड़ियों की खेल अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।**
5. **व्यवसायिक खिलाड़ियों व कॉलेज खिलाड़ियों की खेल अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।**